॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु।

हे प्रभु! जिस शुभ इच्छा से हम तेरा आह्वान करें, वह हमारी पूर्ण हो।

वर्ष ३३, अंक ११ एक प्रति : ३ रुपये
सोमवार ११ जनवरी, २०१० से १७ जनवरी, २०१० तक
विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११० वार्षिक : १५० रुपये
फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं १ से ८ तक

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ वनवासी क्षेत्रों में किए जा रहे कार्यों का द्विदिवसीय दौरा

भामल (झाबुआ-म.प्र.) में नए विद्यालय एवं छात्रावास भवन का निर्माण आरम्भ

वनवासी क्षेत्रों में आर्यसमाज के कार्यों को और बढ़ाना होगा – माता प्रेमलता शास्त्री

दयानन्द सेवाश्रम संघ का कार्य देश और समाज की आवश्यकता की पूर्ति करता है – विनय आर्य

आर्यसमाज के रचनात्मक कार्यों को देखना हो तो वनवासी क्षेत्रों में जाएं। जंगलों में गूंज रहे हैं वैदिक धर्म की जय के नारे।

रचनात्मक कार्य की व्याख्या जाननी हो तो अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित किए जा रहे आदिवासी एवं वनवासी क्षेत्रों में बालवाड़ी आश्रम और विद्यालयों को देखना चाहिए। वास्तविक रूप में जो कार्य किया जाना चाहिए वह यथार्थ देखने को मिला जितनी प्रशंसा की जा उतनी कम है। दयानन्द सेवाश्रम संघ के वर्तमान पदाधिकारियों के कठिन तप का ही परिणाम है कि ऐसे बीहड़ जंगलों में भी वैदिक धर्म की दुंधुभी बज रही है जिन क्षेत्रों को ईसाई लोग अपने प्रचार का प्रमुख केन्द्र बनाना चाहते थे उन क्षेत्रों में उनसे टक्कर लेने के लिए आर्यसमाज का यह संगठन पूरे विश्वास और व्यवस्था के साथ कार्य करने में संलग्न है। उक्त विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री मध्य प्रदेश के थांदला जिला झाबुआ के क्षेत्र में चल रहे वनवासी कल्याण कार्यों के देखरेख के द्विदिवसीय दौरे के अवसर पर व्यक्त किए। दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामन्त्री और अपने जीवन के तप द्वारा इन कार्यों को निरन्तर आगे बढ़ाने वाली 86 वर्ष की आयु में भी कष्ट सह कर इन क्षेत्रों में प्रचार–प्रसार के लिए हमेशा तैयार रहने वाली माता प्रेमलता शास्त्री जी के नेतृत्व में गए प्रतिनिधि मण्डल में संघ के कोषाध्यक्ष श्री धर्मपाल गुप्ता, माता ईश्वर रानी मेहता, श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, दिनेश शर्मा जी,

– जारी पृष्ठ 4 पर

1. भामल में नए विद्यालय का शिलान्यास करते माता प्रेमलता शास्त्री, जोगेन्द्र खट्टर, धर्मपाल गुप्ता एवं श्री विनय आर्य। 2. विद्यालय के लिए भूमिदान करने वाली माताओं के साथ बाएं से दाए श्री जोगेन्द्र खट्टर, दिनेश शर्मा, माता प्रेमलता शास्त्री, ईश्वर रानी मेहता, धर्मपाल गुप्ता तथा पीछे खड़े हैं केन्द्र संचालक श्री संजय (गोले में) एवं केन्द्र बच्चे। 3. शिलान्यास के बाद जल्द से जल्द निर्माण का संकल्प लेते उपस्थित आर्यजन। 4. शिलान्यास के अवसर पर उपस्थित बच्चे एवं ग्रामीण जनता।

19वां विश्व पुस्तक मेला– प्रगति मैदान, नई दिल्ली 30 जनवरी से 7 फरवरी, 2010

उद्घाटन : 30 जनवरी, 2010 (शनिवार) समय : प्रातः 11.00 बजे

पहले से दुगुना होगा इस बार सभा का वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत वर्षों की भांति इस वर्ष नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित होने वाले 19वें विश्व पुस्तक मेलों में वेद, आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा वैदिक धर्म से सम्बन्धित समस्त साहित्य के प्रचारार्थ स्टाल बुक कराया है। आर्यजनों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में स्टाल पर पधारकर तथा अन्य लोगों को स्टाल पर पधारने की प्रेरणा करके कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। हॉल एवं स्टाल नम्बर की सूचना अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान (9350077858) *विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)*

वेदों की नित्यता

वेद ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं इससे वे स्वतः नित्यस्वरूप ही हैं, क्योंकि ईश्वर का सब सामर्थ्य नित्य ही है।

प्रश्नः– इस विषय में कितने ही पुरुष ऐसी शंका करते हैं कि वेदों में शब्द, छंद, पद और वाक्यों के योग होने से नित्य नहीं हो सकते। जैसे बिना बनाने से घड़ा नहीं बनता, इसी प्रकार से वेदों को भी किसी ने बनाया होगा। क्योंकि बनाने के पहले नहीं थे और प्रलय में भी न रहेंगे, इससे वेदों को नित्य मानना ठीक नहीं है।

उत्तरः– ऐसा आपको कहना उचित नहीं, क्योंकि शब्द दो प्रकार का होता है– एक नित्य और दूसरा कार्य। इनमें से जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध परमेश्वर के ज्ञान में हैं वे सब नित्य ही होते हैं, और जो हम लोगों की कल्पना से उत्पन्न होते हैं वे कार्य होते हैं। क्योंकि जिसका ज्ञान और क्रिया स्वभाव से सिद्ध और अनादि है उसका सब सामर्थ्य भी नित्य ही होता है। इससे वेद भी उसकी विद्यास्वरूप होने से नित्य ही हैं, क्योंकि ईश्वर की विद्या अनित्य कभी नहीं हो सकती।

प्रश्नः– जब सब जगत् के परमाणु अलग–अलग होके कारणरूप हो जाते हैं तब जो कार्यरूप सब स्थूल जगत् है उसका अभाव हो जाता है, उस समय वेदों के पुस्तकों का भी अभाव हो जाता है, फिर वेदों को नित्य क्यों मानते हो?

उत्तरः– यह बात पुस्तक, पत्र मसी और अक्षरों की बनावट आदि पक्ष में घटती है, तथा हम लोगों के क्रियापक्ष में भी बन सकती है, वेद पक्ष में नहीं घटती, क्योंकि वेद तो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध स्वरूप ही हैं, मसी, कागज, पत्र, पुस्तक और अक्षरों की बनावटरूप नहीं हैं। यह जो मसी आदि द्रव्य और लेखनादि क्रिया है सो मनुष्यों की बनाई है, इससे यह अनित्य है। ईश्वर के ज्ञान में सदा बने रहने से वेदों को हम लोग नित्य मानते हैं। इससे क्या सिद्ध हुआ कि पढ़ना–पढ़ाना और पुस्तक के अनित्य होने से वेद अनित्य नहीं हो सकते, क्योंकि वे बीजाङ्कुर न्याय से ईश्वर के ज्ञान में नित्य वर्त्तमान रहते हैं। सृष्टि की आदि में ईश्वर से वेदों की प्रसिद्धि होती है और प्रलय में जगत् के नहीं रहने से उनकी अप्रसिद्धि होती है, इस कारण से वेद नित्यस्वरूप ही बने रहते हैं।

जैसे इस कल्प की सृष्टि में शब्द, अक्षर अर्थ और सम्बन्ध वेदों में है इसी प्रकार से पूर्वकल्प में थे और आगे भी होंगे, क्योंकि जो ईश्वर की विद्या है सो नित्य एक ही रस बनी रहती है। उनके एक अक्षर का भी विपरीतभाव कभी नहीं होता। सो ऋग्वेद से लेके चारों वेदों की संहिता अब जिस प्रकार की हैं कि इनमें शब्द, अर्थ, सम्बन्ध, पद और अक्षरों का जिस क्रम से वर्त्तमान है इसी प्रकार का क्रम सब दिन बना रहता है, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है, उसकी वृद्धि, क्षय और विपरीतता कभी नहीं होती। इस कारण से वेदों को नित्यस्वरूप ही मानना चाहिए।

– ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से

The Sixteen Rituals of Aaryas

Seemantonnayan sanskaar

(The ritual for the mental development of foetus)

'Seemant' - this vernacular word literally means brain, while 'Unnayan' literally means development. The word Seemantonnayan thus acquires the meaning of - a ritual in which the mother focuses her attention to brain development of the child. The previous ritual (Punsavan sanskaar) is for physical development while this Seemantonnayan sanskaar caters to mental development. Every physical and mental aspect of the foetus is taken care of by virtue of both these rituals. The book 'Sanskaar Vidhi' mentions that for Seemantonnayan sanskaar, the husband should himself oil the wife's hair with fragrant oil, comb the hair, remove the knots, tie the hair into a nice bun and take her to the temple or hall of Yajya (where the brahmanical fire sacrifice is performed). This implies that during this time both the husband and wife should concentrate on the mental development of the child; they should realize that the child's mental development depends entirely on them and that the way they lead their intellectual lives will leave its impression on the child.

The scripture-writers have considered the mother a mould in which the parents can cast the child exactly the way they want him/her to be. If care is not taken during this time, then after the child's birth, the good or bad external environment starts having a profound effect. The implication of Seemantonnayan sanskaar directs the parents' attention to the child's mental development. The best time for this ritual is when the brain-cells of the fetus start forming. Shaareer Sthaan of Sushrut mentions: In the fifth month, the mind is quite awake, in the sixth the intellect and in the seventh there is manifestation of organs. In the eighth month, the element of (one of the eight essential elements of the body) is not stably formed.

- Gyaaneshwaraarya, *Darshanacacharya*

To be continued....

देववाणी : संस्कृत

स्वामिदयानन्दस्य राजनैतिकं चिन्तनम्

अर्थात् स्वतेजसा शत्रु–विदारको विद्या–धनोन्नतये प्रजानां प्रेरक उत्साहवर्धकश्च सभापती राजा प्रजाभिरवश्यं चीयेत। नहि तस्य तेजसा विना प्रजा–जनाः कदाचिदुत्साहेनोन्नतिं कर्तुमर्हन्ति। सभापतिपदयोग्यता विषये स्वामी दयानन्दो वेद–भाष्ये विस्तारेण वर्णयति। केचिदत्रोदाह्रियन्ते। राजा सर्वेभ्यः सभ्येभ्योऽत्युत्तम विद्वान्, सनातनराजनीतिज्ञः, राज्य–संरक्षणे समर्थः, सर्वोत्कृष्ट–गुण–कर्म–स्वभावः, श्रेष्ठानां प्रसिद्धाप्रसिद्धानां च सत्कर्ता च स्यात्। स एवं प्रजाभिः सभापतित्वेन चेतुं योग्यो यस्य चापरिमिता पूर्णबलवती च चमू, महती कीर्तिश्च। स पूर्ण कृत–ब्रह्मचर्य–व्रतस्य पुत्रः, स्वयं चानुष्ठितपूर्णबह्मचर्यविद्यः, बाल्यावस्थामारभ्यैव सुचेष्टः, विद्वत्सेवी, सुशिक्षः, न्याय मार्गानुवर्त्ती, धनुर्विद्या–वित्, दक्षः, युद्धेनिर्भयः आपत्कालनिवारकः, धर्मोपार्जित–धनः, निरभिमानः, कार्य–सिद्धि–तत्परः बलिष्ठः, प्रतिष्ठित–क्षत्रिय–कुलजः, ईश्वर–भक्तः, प्रगल्भः, सत्य–वादी, जितेन्द्रियः, विद्या–धर्म–प्रचारकः, सर्वेषु विद्वत्सु गंभीरबुद्धिः, सर्वेषु मनुष्येषु मान्यः, पूर्णाङ्गः, अव्यर्थ–व्ययकर्ता, अव्यसनी, पक्ष–पातरहितः, विनय–शीलः, अनुष्ठित–नित्यकर्मः यस्य सङ्गे दुष्टा अपि श्रेष्ठाः, कातरा अपि शूराः, कृपणा अपि दातारो भवन्ति (द्र.य.10.2, 9.40, ऋ 4.21.2, 3.45.5, 4.24.9, 5.35.6 आदयः)। एवं गुणवानेव स्वामिदयानन्दमतेराजत्वाय योग्यः। स एव ह्यत्यन्तं दुष्करं राज्य–धुरं वोढुं शक्नुयादिति। एवं विधेराज्ञि प्रजा–जनाः सुखतमं जीवनं निर्वोढुं शक्नुवन्ति। यो न्यून–गुणो भवति, न स राज्ये व्यवस्थां कर्तु समर्थः स्यात्। तेन प्रजाजीवनमत्यन्तं दुःखमयं भविष्यति।

यतो हि राज्य–शासनं सभाधीनमत एव सर्वेऽपि सभ्या योग्याः स्युः। सर्वेऽपि ज्ञानकर्मोपासनाख्यविद्यात्रय–वेत्तारः, सनातनराजनीतिज्ञा, ईश्वरोपासकाः, धर्मात्मानः, व्यवहार–विदः, जितेन्द्रियाः, राजभक्ताः स्युः (द्र.य.7.29, 29.46, ऋ 2. 26.4 आदि)। अतः स्वामिदयानन्द–मते राज्ञः सभ्यानां च गुणवत्ता, योग्यता च सौराज्यायात्यन्तं महत्वपूर्णा भवति। एते च गुणा विद्याभ्यासेनैव संपादितुं शक्याः। अत एव राज्ञा विद्वांसः प्राधान्येन सत्कार्याः। तथा च–

श्रावयेदस्य कर्णा वजयध्यै जुष्टामनु प्रदिशं मन्दयध्यै।
उद्वावृषाणो राधसे तुविष्मान् करन्न इन्द्रः सुतीर्थाभयञ्च।। (ऋ.4.17.9)

– आचार्यो रवीन्द्रः, आर्ष विश्वविद्यालयम् वडलूरु, कामारेड्डी (आं.प्र.)
(राष्ट्रिय संस्कृत संगोष्ठी, 5–6 सितम्बर,09 को पाठित निबन्ध)

क्रमशः

बोध कथा

मोह ममता के रिश्ते हैं सब कोई नहीं यहां अपना रे!

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

गतांक से आगे :–

आज यदि सुमार्ग पर न आया तो फिर प्रयत्न करने पर भी नहीं आ पायेगा। आज तू पहाड़ों का सीना चीर सकता है। तूफानों को ललकार सकता है। सागरों की छाती पर सवार हो सकता है। आज तुझे सूर्य और चन्द्रमा खिलौने प्रतीत होते हैं, परन्तु समय आयेगा, जब तू हाथ हिलाना चाहेगा और वह हिलेगा नहीं। पाँव से चलना चाहेगा और वे चलेंगे नहीं। जब पास रखी लाठी भी तुझे दिखाई न देगी। अभी समय है, सँभल सके, तो सँभल, नहीं तो फिर यह समय कभी आयेगा नहीं।"

महात्मा ने इस प्रकार कहा तो नौजवान चौंका। महात्मा की वाणी में प्रभाव था। वे सच्ची बात कह रहे थे। इससे युवक के मन पर चोट लगी और वह बेचैन हो उठा; हाथ जोड़कर बोला– "महाराज! ऐसी बात कभी पहले नहीं सुनी। आप आज्ञा दें, तो कभी–कभी आपके पास आ जाया करूँ।"

महात्मा ने कहा– "तुम जब भी चाहो, आ सकते हो। मेरे यहाँ कोई रोक–टोक नहीं है।"

वह युवक प्रतिदिन महात्मा जी के पास आने लगा। महात्मा जी ने उसे यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि की बातें सुनाईं। वे हृदय से युवक को सुधारना चाहते थे। युवक के हृदय में लगन थी। उसने शीघ्रता से इन बातों को सीखा। महात्मा जी ने इस युवक को दस भट्टियों में डालकर कुन्दन बना दिया। उसकी पुरानी आदतों का चिह्न ही मिट गया। अब वह यम–नियमों का पालन करता, कई–कई घण्टे आसन लगाता। कई प्रकार के प्राणायाम करता, ध्यान भी लगाता। महात्मा ने उसे सब कुछ बता दिया। 'प्राणायाम उत्थान' की विधि भी बता दी कि किस प्रकार पाँव के अँगूठे से लेकर शरीर के प्रत्येक अंग से प्राण को ब्रह्मरन्ध्र में पहुँचा दिया जाता है। यह सब कुछ बताया, परन्तु समाधि की विधि नहीं बताई।

एक दिन युवक ने कहा– "महाराज! आपने सब कुछ बताया, परन्तु समाधि लगाने की विधि तो बताई ही नहीं?"

महात्मा हँसकर बोले– "बतायेंगे, अभी जल्दी क्या है?"

कुछ समय व्यतीत हुआ तो युवक ने कहा– "महात्मा जी, अब?"

– क्रमशः

स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा गांधी

जब कतिपय आर्यजनों के बीच यह प्रश्न उठा कि गांधी जी को **महात्मा** कहकर सबसे पहले किसने संबोधित किया, तो कुछ लोगों ने कविवर रवीन्द्र नाथ टैगोर का नाम लिया और कुछ ने मदनमोहन मालवीय, सुभाषचन्द्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि का नाम लिया, पर जब मैंने स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम लिया तो अनेक लोगों ने शंकाएं व्यक्त की। किसी का कहना था कि स्वामी श्रद्धानन्द तो बहुत पहले हुए हैं। किसी का कहना था कि गांधी जी तो मुसलमानों के समर्थक थे। स्वामी श्रद्धानन्द आर्यसमाजी होने से मुसलमान विरोधी थे। वे गाँधी जी को **महात्मा** कैसे कह सकते हैं। इन शंकाओं का निवारण करने के लिए मुझे अपनी बात उन्हें विस्तार से समझानी पड़ी जिसके मुख्य निम्नलिखित बिन्दु थे–

जहां तक इन महापुरुषों के समकालीन होने न होने का प्रश्न है, उसका समाधान तो इस तथ्य से ही हो जाएगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म 1856 में और स्वर्गवास 1926 में हुआ था, महात्मा गांधी का जन्म 1869 और स्वर्गवास 1948 में हुआ था। स्पष्ट है कि उनके सामाजिक कार्यकलाप का जीवन लगभग साथ–साथ ही बीता। गांधी जी को मुसलमानों का समर्थक, स्वामी श्रद्धानन्द एवं आर्यसमाज को मुसलमान विरोधी कहना ठीक नहीं है। आपको पता है कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के प्रशंसक मुसलमान भी थे, वे महर्षि के व्याख्यान सुनने भी आते थे। केवल सुनते ही नहीं थे, बल्कि अपनी शंकाओं का निवारण भी करते थे। वह उदाहरण तो बहुत प्रसिद्ध है ही जब महर्षि का व्याख्यान सुनने के बाद सर सैयद अहमद खां ने यह शंका व्यक्त की थी कि हवन में डाले जाने वाले थोड़े से घी और सामग्री से वायु शुद्धि कैसे संभव है। महर्षि ने दाल में डाली जाने वाली जरा–सी हींग का उदाहरण देकर उन्हें संतुष्ट किया था। देश की सबसे पहली आर्यसमाज की स्थापना महर्षि ने मुंबई के काकड़वाड़ी में जिस भवन में की थी, उसमें सन 1938 में पुस्कालय, अतिथिगृह आदि का निर्माण करने के लिए लोगों ने दान दिया। उनमें सबसे पहला नाम है– सेठ हाजी अल्लारखा रहमतुल्ला सोनावाला का। उन्होंने पांच हजार रुपए यह कहकर दिए कि **सभी मतावलंबियों का हित चाहने वाली आर्यसमाज जैसी संस्था कोई नहीं।** जनमानस में आर्यसमाज और उसके अनुयायियों की तब यही छवि थी। यही कारण था कि स्वामी श्रद्धानंद जी को 4 अप्रैल 1919 को दिल्ली की जामा मस्जिद में आमन्त्रित किया गया। वहां उन्होंने वेदमन्त्र पढ़कर व्याख्यान दिया। इसलिए उन्हें मुसलमान विरोधी कहना उचित नहीं। यह सच है कि गांधी जी से अनेक विषयों पर उनके मतभेद थे, पुनरपि वे एक–दूसरे का से सम्मान करते थे।

उन्होंने गांधी जी को 'महात्मा' क्यों और कब कहा? सन्1913 में गांधी जी दक्षिण अफीका में वहां रहने वाले भारतीयों के अधिकारों के लिए सत्याग्रह आंदोलन चला रहे थे। इस आंदोलन में आर्थिक सहायता देने के लिए भारत में दीनबंधु सी. एफ. एण्ड्रूज, गोपालकृष्ण गोखले जैसे नेता चंदा इकट्ठा कर रहे थे। हरिद्वार के पास गुरुकुल कांगड़ी स्थापना सन् 1902 में स्वामी श्रद्धानन्द कर चुके थे, तब उनका नाम मुंशीराम था। स्वामी श्रद्धानन्द नाम तो उनका तब हुआ जब 12 अप्रैल 1917 को उन्होंने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया। सन् 1898 में गुरुकुल की स्थापना के लिए तीस हजार रुपए इकट्ठे करने का संकल्प लेकर जब उन्होंने घर छोड़ा तभी से लोग उन्हें सम्मान से 'महात्मा मुंशीराम' कहने लगे थे। गांधी जी के दक्षिण अफीका में चल रहे आंदोलन के लिए आर्थिक सहयोग देने की आवश्यकता मुंशीराम जी ने गुरुकुल के विद्यार्थियों/ शिक्षकों को समझाई। सबने निश्चय किया कि अपने भोजन में कमी करके, दूध–घी बंद करके और हरिद्वार में बन रहे दूधिया बांध पर मजदूरी करके धन संग्रह करेंगे। उन्होंने इस प्रकार एक हजार पांच सौ रुपए इकट्ठे किए और गोखले जी के पास भेज दिए। गोखले जी और दीनबंधु एण्ड्रूज मुंशीराम जी के अभिन्न मित्र थे। गोखले जी के पास यह राशि उस समय पहुंची जब वे हताश हो गहरी चिंता में डूबे थे। कहते हैं कि राशि मिलते ही वे मारे खुशी से कुर्सी से उछल पड़े और बोले कि ये पन्द्रह सौ नहीं, पन्द्रह हजार से भी अधिक कीमती हैं। उन्हें पता था कि गुरुकुल–परिवार ने किस प्रकार यह राशि इकट्ठा की है। उन्होंने 27 नवंबर, 1913 को महात्मा मुंशीराम जी को दिल्ली से हिंदी में अपने हाथ से लिखकर पत्र भेजा। उसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और अध्यापकों की भावना और त्याग की भूरि–भूरि प्रशंसा की थी। इसे देशभक्तिपूर्ण कार्य बताया था, भारत माता के प्रति कर्तव्य पालन बताया था। उन्होंने और दीनबंधु एण्ड्रूज ने गांधीजी को गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और अध्यापकों के इस त्याग से अवगत कराया। अतः गांधीजी ने फीनिक्स, नैटाल, दक्षिण अफ्रीका से मुंशीराम जी को पहला पत्र अंग्रेजी में लिखा, जिसका प्रारंभ अंश इस प्रकार था: –

प्रिय महात्मा जी,

मि. एण्ड्रूज ने आपके नाम और काम का मुझे परिचय दिया है। मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मैं किसी अजनबी को पत्र नहीं लिख रहा। इसलिए आशा है कि आप मुझे "महात्मा जी" लिखने के लिए क्षमा करेंगे। मैं और मि. एण्ड्रूज आपकी और आपके काम की चर्चा करते हुए आपके लिए इसी शब्द का प्रयोग करते हैं... गांधी जी के भारत आने से पहले ही फीनिक्स से सत्याग्रह आश्रम के विद्यार्थी भारत आ गए। अहमदाबाद में आश्रम की स्थापना का निश्चय तब तक नहीं हुआ था। इसलिए गांधी जी ने अपने विद्यार्थियों के लिए सर्वोत्तम स्थान गुरुकुल ही तय किया। सन् 1914 में ये विद्यार्थी गुरुकुल आ गए और कई महीने वहीं रहे। 1915 में गांधी जी भारत आए। उन्होंने पूना से महात्मा मुंशीराम जी को हिन्दी में पत्र लिखा,

........मेरे बालकों के लिए जो परिश्रम आपने उठाया और जो प्यार बतलाया उस वास्ते आपका उपकार मानने को मैंने भाई एण्ड्रूज को लिखा था; लेकिन आपके चरणों में शीश झुकाने को मेरी उम्मेद है। इसलिए बिना आमंत्रण आने का भी मेरा फर्ज समझता हूँ। मैं बोलपुर पीछे फिरूं उससे पहले आपकी सेवा में हाजिर होने की मुराद रखता हूँ ।..........

उस वर्ष हरिद्वार में कुंभ भी था। गांधी जी बिना पूर्व सूचना के गुरुकुल आये। वहां उन्होंने महात्मा मुंशीराम के चरणस्पर्श किए। यही वह अवसर था जब मुंशीराम जी ने भी गांधी जी को 'महात्मा जी' कहकर संबोधित किया। इस अवसर पर गुरुकुल के विद्यार्थियों की ओर से गांधी जी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। जिसमें उन्हें 'महात्मा जी' ही लिखा गया। गांधी जी ने भाषण में कहा– मैं हरिद्वार केवल महात्मा जी के दर्शनों के लिए आया हूँ। मैं उनके प्रेम के लिए कृतज्ञ हूँ। मि. एण्ड्रूज ने मुझको भारत में अवश्य मिलने योग्य जिन तीन महापुरुषों का नाम बताया था, उनमें महात्मा जी एक हैं।... .... मुझे अभिमान है कि महात्मा जी मुझको भाई कहकर पुकारते हैं। मैं अपने में किसी को शिक्षा देने की योग्यता नहीं समझता, किंतु महात्मा जी जैसे देश के सेवक से मैं स्वयं शिक्षा लेने का अभिलाषी हूँ।..........

ये ऐतिहासिक तथ्य बता रहे हैं कि राष्ट्रपति गांधी जी को 'महात्मा' कहकर संबोधित करने वाले पहले व्यक्ति थे। –स्वामी श्रद्धानन्द 'महात्मा मुंशीराम' और जिस स्थान पर उन्हें यह सम्मान दिया गया वह था–गुरुकुल कांगड़ी।

– डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री
पी/138 एमआइजी, पल्लवपुरम
फेज –2, मेरठ (उ. प्र.)

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (12)

पृथिव्यधिकार रूप शब्दान्तरेभ्यः ।।१२।।

अर्थ– (पृथिवी) पृथ्वी (अधिकार रूप शब्दान्तरेभ्यः) अधिकार से, रूप से और शब्दान्तर से।

भावार्थ– जल के बाद पृथ्वी की उत्पत्ति होती है। यह बात छांदोग्यादि उपनिषदों में कही गई है, जो अधिकार से, रूप से और शब्दान्तर से भी सिद्ध होती है। परन्तु छान्दोग्य उपनिषद् में जल के बाद अन्य की उत्पत्ति होती है ऐसा वर्णन है। इससे शास्त्रों में विरोध प्रतीत होता है। यहाँ सूत्रकार के अनुसार, शास्त्रों में कोई विरोध नहीं है। इसमें प्रयुक्त 'अन्न' शब्द का प्रयोग पृथ्वी महाभूत के लिए किया गया है। यह तथ्य अधिकार से, रूप से और शब्दान्तर से ज्ञात होता है। यहाँ 'अधिकार' शब्द से अभिप्राय प्रकरण से है अर्थात् प्रकरण के अनुसार तेज और जल के बाद पृथ्वी का उल्लेख होना चाहिए। अतः 'अन्न' शब्द से यहाँ पृथ्वी का ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि बिना पृथ्वी के अन्न की उत्पत्ति संभव नहीं है।

तैत्तिरीय उपनिषद् (२/१) और मुंडक उपनिषद् (२/२/३) में जल की उत्पत्ति के बाद स्पष्ट रूप से पृथिवी का उल्लेख है, वहाँ कहा है – ''अद्भ्यः पृथिवी'' और बृहदारण्यक उपनिषद् (१/२/२) में कहा है – ''तद् यदपां शर आसीत्तत् समहन्यत'' अर्थात् सृष्टि उत्पत्ति के समय 'आपस्' का जो माँड की तरह का घना द्रव्य बना वह एक–दूसरे से मिल कर कठोर हो गया, वही पृथिवी था। जहाँ तक रूप का संबंध है 'अन्न' का रूप (वर्ण) कृष्ण (काला) बताया गया है जो पृथिवी महाभूत का रूप है। इससे भी प्रतीत होता है कि वहाँ 'अन्न' शब्द का पृथिवी के संदर्भ में प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त तीसरे 'शब्दान्तर' से अर्थात् दूसरे 'शब्द प्रमाण' से भी सिद्ध होता है कि 'जल' के बाद 'पृथिवी' उत्पन्न होती है। जैसा कि संकेत किया जा चुका है कि ''अदभ्यः पृथिवी'' (तैत्तिरीय उपनिषद् (२/१) अर्थात् जल से पृथिवी उत्पन्न होती है।

इस प्रकार ऊपर बताए तीन हेतुओं अर्थात् अधिकार (प्रकरण) रूप (वर्ण आदि) और शब्दान्तर से यानी अन्य 'शब्द' प्रमाण से सिद्ध होता है कि 'अन्न' पद पृथिवी महाभूत के लिए प्रयुक्त हुआ है।

– शिष्य जिज्ञासा करता है कि ब्रह्म को इन महाभूतों की रचना करने वाला निश्चय किया गया है वह इनकी रचना किस प्रकार करता है? जबकि ब्रह्म हाथ–पाँव आदि इन्द्रियों कला नहीं है अर्थात् निराकार, कूटस्थ पर ब्रह्म जगत् का निर्माण कैसे कर सकता है? अगले सूत्र में सूत्रकार इसका समाधान करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (मुम्बई) द्वारा वैदिक विद्वान आचार्य पं. भद्रसेन जी के सुपुत्र, सार्वदेशिक सभा के प्रधान

कैप्टन देवरत्न आर्य जी का सार्वजनिक अभिनन्दन

दिनांक : 31 जनवरी, 2010 (रविवार) स्थान : आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई

आर्यजगत के गौरव, आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान, महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर, महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित उत्तराधिकारिणी सभा श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर, सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर जैसी शीर्ष संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदों को ग्रहण कर कुशल नेतृत्व देने वाले आर्यसमाज सान्ताकुज के समर्पित कार्यकर्ता, प्रधान एवं महामन्त्री पद को कई वर्षो तक सुशोभित करने वाले, वेद–वेदांग, वेदोपदेशक पुरस्कार एवं अन्य विशिष्ट पुरस्कारों को आरम्भ कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले, आर्यसमाज से सम्बद्ध विभिन्न संस्थाओं के ट्रस्टी, देश–विदेश में ख्याति प्राप्त **आदरणीय कैप्टन देवरत्न आर्य जी का आर्यसमाज सान्ताकुज द्वारा** दिनांक 31 **जनवरी, 2010** को सार्वजनिक अभिनन्दन किया जायेगा। इस अवसर पर उनके शुभ चिन्तकों द्वारा एकत्रित की गयी धन राशि भी उन्हें भेंट की जायेगी। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर समारोह के साक्षी बनें। आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा वार्षिक सम्मान समारोहों के 25वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में यह अभिनन्दन किया जाएगा।

– संगीत आर्य, महामन्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

भामल (झाबुआ–म.प्र.) में नए ...

निर्मल गुप्ता जी एवं माता रत्नेश जी सम्मिलित थीं। संघ द्वारा ग्राम भामल में विद्यालय एवं छात्रावास के लिए नए भवन के शिलान्यास के अवसर पर यह दौरा आयोजित किया गया था। भामल ग्राम में अनेक वर्षों से बालवाड़ी, विद्यालय एवं छात्रावास किराए पर लिए गए मकान में संचालित होता था किन्तु गाँव की ही दो माताओं द्वारा दान में दी गई छः बीघा भूमि पर नए भवन का शिलान्यास इस अवसर पर किया गया। संघ द्वारा पचास हजार रुपये एवं आर्य गुरुकुल रानीबाग द्वारा भी पचास हजार रुपये का आरम्भिक सहयोग भी इस अवसर पर उस क्षेत्र में कार्य कर रहे कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री आचार्य जीववर्धन जी को सौंपा गया आचार्य जीववर्धन जी के कुशल निर्देशन में बाँसवाड़ा, कुशलगढ़ तथा थांदला क्षेत्र के केन्द्रों को संचालित किया जा रहा है। मुख्य केन्द्र थांदला में बच्चों के लिए दाहोद के दानी श्री हरिश्चन्द्र साहित्यानी जी के दान से निर्मित भोजनशाला का उद्घाटन उन्हीं के तथा माता जी के करकमलों से सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री विनय आर्य ने माता प्रेमलता जी के साथ सभी केन्द्रों के प्रतिनिधियों की बैठक भी लीं जिसमें उस क्षेत्र में कार्यों को बढ़ाने के लिए सुझाव आमंत्रित किए गए। बैठक में आचार्य जीववर्धन जी, धर्मपाल गुप्ता जी एवं श्री जोगेन्द्र खट्टर जी विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर उस क्षेत्र में चल रहे अनेक केन्द्रों पर यह प्रतिनिधि मण्डल गया जहाँ उनके संचालकों एवं बच्चों द्वारा माता जी का विशेष स्वागत किया गया। स्थान–स्थान पर रुकवा– रुकवा कर जैसे माता जी का अभिनन्दन किया गया उससे मन में एक अपूर्व उत्साह का संचार हुआ। साथ ही यह बात भी सामने आयी कि यदि इन क्षेत्रों में सेवाश्रम संघ ने कार्य न किया होता तो सारा क्षेत्र पूर्ण रूप से ईसाई बन चुका होता। जिन जंगलों में आज छोटे–छोटे बच्चों के हाथों में ओ३म् के ध्वज दिखाई दे रहे थे, वैदिक धर्म की जय, महर्षि दयानन्द की जय के नारे सुनाई दे रहे थे, सम्भवतः इन कार्यों के अभाव में सबके गलों में क्रास दिखाई देते और सब स्थानों पे वेद मंत्रों के स्थान पर बाईबिल की प्रार्थनाए चला करती। वहाँ जाकर जो कुछ देखा उसका वर्णन छोटे से समाचार में तो सम्भव नहीं है इसके लिए विस्तृत रिपोर्ट बनाकर देने का प्रयास करेंगे साथ ही साथ कभी प्रबुद्ध आर्यजनों को उस क्षेत्र में ले जाने के लिए भी सभा की ओर ले जाने का भी विचार किया जाएगा। *– विनय आर्य, महामन्त्री*

आर्यसमाज श्रीगंगानगर ने मनाया वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज, श्री गंगानगर में दिनांक 15 नवम्बर, 2009 से 22 नवम्बर, 2009 तक चतुर्वेद यज्ञ, भजन और प्रवचन का आयोजन वेद प्रचार सप्ताह के माध्यम से किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या धारणा जी थीं। आर्ष कन्या गुरुकुल, शिवगंज सिरोही की छात्राओं ने श्रोताओं को देश भक्ति, नारी उत्थान, महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के प्रसंगों को प्रस्तुत किया। मेवात के भजनोपदेशक श्री धनीराम बेधड़क ने वेदमंत्रों की व्याख्या, देशभक्ति, क्रांतिकारी, राष्ट्र के बिगड़ते हालात और भारत के प्राचीन ज्ञान गौरव व वीरतापूर्ण इतिहास को अपने भजनों व गीतों के माध्यम से रखा। मुख्य प्रवचनकर्त्ता डॉ. सुरेन्द्र कुमार (मनुस्मृति विशेषज्ञ), प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु, डॉ. भवानीलाल भारतीय आदि ने अंधविश्वास, कुरीतियों, मिथ्या आडम्बरों पर तर्क पूर्ण प्रहार कर नीति परक विचार रखे।

आचार्य धर्मदेव वेदाशुं (पुरोहित आर्यसमाज, श्रीगंगानगर) जी ने यज्ञ के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभायी। मंच संचालन श्री हर्षवर्धन जी शास्त्री ने किया। आर्यसमाज के मंत्री डॉ. गौर मोहन माथुर ने आर्यसमाज की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने गंगानगर व बाहर से पधारे श्रोताओं, विद्वानों, दानदाताओं, कार्यकर्त्ताओं के प्रति आभार जताया। आर्यसमाज के प्रधान श्री भूपेन्द्र खन्ना (आर्य) ने आर्यसमाज के पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, विद्वानों का आभार व्यक्त किया। *– डॉ. भवानीलाल भारतीय*

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) चलो!

धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थानों की बस यात्रा

(8 फरवरी से 19 फरवरी 2010)

दर्शनीय स्थल : अजमेर, पुष्कर राज, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, पोरबन्दर, राजकोट, वृन्दावन, मथुरा आदि।

किराया बस प्रति सवारी : 2700/– रुपये

यात्रा कार्यक्रम : 8 फरवरी : रात्रि 9 बजे आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय, गुड़गाँव से प्रस्थान। अजमेर, जोधपुर, माउंट आबू का भ्रमण करते हुए। **11 फरवरी** को टंकारा। 11 व 12 फरवरी टंकारा में। **13 फरवरी** प्रातः 5 बजे टंकारा से द्वारिका, पोरबन्दर। **14 फरवरी** प्रातः 11 बजे सोमनाथ मंदिर, राजकोट। **15 फरवरी** प्रातः 6 बजे राजकोट से गाँधीनगर, अक्षरधाम, उदयपुर। **17 फरवरी** प्रातः 8 बजे चित्तौड़गढ़ से, जयपुर, मथुरा, वृन्दावन होते हुए **19 फरवरी** 2010 को सायं गुड़गाँव पहुँचेंगे।

विशेष : सीट बुक कराने से पहले कार्यक्रम ध्यान से पढ़ लें।

1. मौसम के अनुसार बिस्तर, पानी की बोतल एवं टॉर्च आदि साथ लाएं।
2. शीघ्रातिशीघ्र अपनी सीट बुक करवा लें। आधी सवारी को सीट नहीं मिलेगी। राशि जमा होने के बाद वापस नहीं होगी। कार्यक्रम में परिवर्तन करने एवं सीट नम्बर देने का अधिकार प्रबन्धक को होगा। यात्रीगण समय का विशेष ध्यान रखें।

नोट : निवास एवं भोजन की व्यवस्था आर्यसमाजों में होगी, यदि कहीं ऐसा नहीं हुआ तो यात्रीगण अपने व्यय से करेगें।

यात्रा प्रबन्धक :– मा. सोमनाथ, 363–364, प्रताप नगर, गुड़गाँव
फोन नं० : 2327344, 9811762364, 2304873

आर्य वन रोजड़ में योग शिविर

स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्य वन में दिनांक 21 मार्च से 28 मार्च तक 8 दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें माताएँ भी भाग ले सकती हैं। शिविरार्थी 21 मार्च, 2010 को सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँच जाएं। शिविर में स्थान आरक्षित नहीं माना जाएगा। – ब्र. दिनेश कुमार, व्यवस्थापक

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

अब घर बैठे पाएं मात्र 52/– किलो

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में 5, 10 एवं 20 किलो के पैकेटों में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

कम से कम 50 किलो आर्डर करने पर ही भेजी जा सकेगी।
आर्डर अनुसार प्रेषण प्रत्येक शनिवार को किया जाएगा।

आप अपने आर्डर सभी कार्यदिवसों में दोपहर 12 से रात्रि 8 बजे तक फोन : 011–23360150, 9717174441 पर बुक करा सकते हैं। दिल्ली से बाहर मंगाने पर डाक/ट्रांसपोर्ट व्यय अतिरिक्त देय होगा। *– संयोजक*

विश्व में आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं, आदर्शों, नियमों को फैलाने में प्रयासरत

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की भावी योजना – (३)

युगानुरूप प्रचार योजना (कॉमिक्स एवं सीडी द्वारा)

आज लगता है कि समय पंख लगाकर उड़ रहा है। किसी वस्तु को हम हाथ में लेकर देखते–देखते भूल से पलक झपक लेते हैं तो पता चलता है कि वह वस्तु कालातीत हो जाती है, पुरानी पड़ जाती है। अगले ही पल हमारे सामने उसका संशोधित संस्करण, नया स्वरूप रख दिया जाता है। फैशन की दुनिया में सुबह की चीज शाम को चलन से बाहर हो जाती है। लगता है, आदमी नएपन के आवेश में अपना भूत व वर्तमान दोनों को दाँव पर लगा चुका है। इस संवेदनशील युग में अपने आप को टिकाए रखने के लिए हम सबको कई दृष्टियों से जागरूक व सजग रहना पड़ेगा। हमारे कन्धों पर देव दयानन्द का दिया हुआ बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। उन्होंने हमें संसार के शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण का उत्तरदायित्व ऋषि–ऋण के रूप में सौंपा था। विकास के उत्साह में भविष्य के गर्भ को चीरकर उसमें छिपे काल्पनिक सुखों को ढूँढ़ने को आतुर विश्व मानव के कानों में 'वेद की ओर लौटने' का ऋषि आह्वान कैसे पहुँचे, इसका समाधान खोजना पड़ेगा। सभा इस दिशा में विचार शील ही नहीं, प्रयत्नशील भी है। सभा ने इस समस्या का व्यावहारिक समाधान खोजा है, उस पर कार्य करके देखा तो उसका परिणाम बड़ा ही उत्साहवर्धक एवं आशातीत सफल रहा। युवक–युवतियों को बड़ी–बड़ी डिग्रियाँ लेने के साथ–साथ रोजगार पाने की प्रबल चिन्ता सता रही है। 25–30 से ऊपर निकल गए तो प्रमोशन, व परिवार के पालनपोषण की चिन्ता। वृद्धपीढ़ी की अपनी अनेक चिन्ताएँ और व्यस्तताएँ हैं। ले–देकर हमारे लिए बचपन व किशोर आयु रह जाती है, जो अपनी पढ़ाई–लिखाई से बचे समय को कॉमिक्स पढ़ने या कार्टून चैनल्स देखते हुए गुजारते हैं। सभा ने इस पर विचार करके कॉमिक्स शैली से महर्षि दयानन्द के जीवन की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं को चित्रांकन एवं संक्षिप्त संवाद के रूप में एक लघु पुस्तिका के माध्यम से प्रकाशित कराकर, एक आकर्षक पुरस्कार योजना के साथ प्रचारित–प्रसारित किया। तीर निशाने पर लगा, आर्य जनता ने इसे खुले हृदय से स्वीकार किया। इसकी लोकप्रियता देखकर सभा का उत्साह बढ़ा। सिरीफोर्ट के विशाल सभागार में हुए समारोह में आचार्य वागीशजी तथा सुरेन्द्र जी आर्य अध्यक्ष, जय भारत मारुति लि. ने इस तथ्य पर बल दिया, कि हमें प्रचार–प्रसार के आधुनिक संचार माध्यमों का उपयोग करना चाहिए। इससे उत्साहित होकर सभा ने एक योजना भी हाथ में ली है। सभा ने निर्णय लिया है कि सर्वप्रथम ऋषि की जीवनी को अंग्रेजी में कॉमिक्स शैली में प्रकाशित करे तथा उसके लिए हम योजना बद्ध ढंग से काम करें। यह काम चल रहा है। इसी के साथ महर्षि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक व अनुयायी आर्य महापुरुषों की जीवन आदर्शों व प्रेरक घटनाओं को भी कॉमिक्स शैली में ढाल कर बाल मन तक पहुँचाने का काम भी प्रगति पर है।

आर्य पुरुषों के जीवन आदर्शों एवं प्रेरक प्रसंगों को युवा पीढ़ी तक पहुँचाने के साथ–साथ महर्षि के वैदिक सिद्धान्तों की महत्ता व उपयोगिता के प्रचार –प्रसार की योजना भी है। इसके लिए महर्षि के ग्रन्थों में उन्होंने जो रोचक दृष्टान्त व कथानक दिए हैं, उन सबको एकत्रित करके उनका चित्रांकन कॉमिक्स रूप में तथा फिल्मांकन सी.डी. व लघु वृत्त चित्र के रूप में तैयार कराकर सभा उसे आप सब आर्यों के सहयोग व समर्थन से जन सामान्य तक पहुँचाना चाहती है। सभा का विचार है कि महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण साहित्य को पढ़ना अथवा उनमें दिए सैद्धान्तिक दृष्टान्तों को पढ़ना–समझना सबके लिए सम्भव नहीं। इसके लिए उचित है कि हम कॉमिक्स की रोचक शैली में जैसेकि – तेनालीराम, शेख चिल्ली व चाचा चौधरी जेसे कार्टून कॉमिक्स बच्चों में लोकप्रिय होते हैं, उसी प्रकार लोकप्रिय शृंखला में महर्षि के दृष्टान्तों को नई पीढ़ी के लिए रोचक शैली में तैयार करना होगा। ऐसा करके हम बालकों के मनोमस्तिष्क तक महर्षि के वैदिक सिद्धान्त पोषक दृष्टान्तों को सरलता से पहुंचाकर नई पीढ़ी को वैदिक धर्मी बनाने कीह दिशा में काम किया जा सकता है। आज का समय पुराने रंग–ढंग के साथ काम करने का नहीं रहा। हमें तकनीकी विकास पर पैनी दृष्टि रखनी होगी तथा प्रचार–प्रसार के नए–नए तरीके विकसित करने होंगे। महर्षि दयानन्द की सोच समय से पहले चलने की थी। वे हर कार्य में देश, काल और परिस्थिति का ध्यान स्वयं भी रखते थे तथा सबको इसकी शिक्षा देते थे। हम महर्षि की दूरदृष्टि का लाभ न उठा सके और परम्परागत प्रवृत्तियों में पड़े रहकर पिछड़ गए। आज सभी मत–पन्थवाले तथा संस्थाएं बनाकर काम करने वाले लोग केवल संचार माध्यमों को अपनाकर कहाँ से कहाँ पहुँच गए हैं। आर्यो! अगर हमने इस दिशा में विचार नहीं किया तथा प्रचार कार्य को आधुनिक न बनाया, तो हम महर्षि के पावन अभियान के साथ न्याय नहीं कर सकेंगे। सभा ने एक विस्तृत कार्य योजना बनाकर कई प्रकल्पों पर गम्भीरता से काम करना प्रारम्भ कर दिया है। इस कार्य योजना में सभी आर्यसमाजों एवं आर्य पुरुषों के आत्मीय सहयोग की आवश्कता है। हम इन योजनाओं को आप तक इसलिए भी पहुँचाना चाहते हैं, ताकि हमारे विचारशील एवं कर्मशील आर्य युवक व आर्य स्त्री–पुरुष जो भी सामर्थ्य रखते हों, तो वे सभा से जुड़कर इस पुण्य–प्रयास में सक्रिय भागीदारी निभाकर ऋषि ऋण को चुकाने का सौभाग्य प्राप्त करें। कार्य करना और कार्य को सही ढंग से प्रभावशील रूप में करना दोनों अलग बातें हैं। सभा आपकी प्रतिभा योग्यता व क्षमता का सही दिशा में सदुपयोग करने का संकल्प व्यक्त करती है। आओ, दिल्ली सभा से जुड़कर एक नए क्रान्तियुग का सपना साकार करें।

समय की पुकार यही है–

वक्त को जिसने नहीं समझा,
उसे मिटना पड़ा है।
बच गया तलवार से तो,
फूल से कटना पड़ा है।।
क्यों न कितनी ही बड़ी हो,
क्यों न कितनी ही कड़ी हो,
हर नदी की राह से,
चट्टान को हटना पड़ा है।।

(नदी जैसी सतत् गति रखो तो कठिनाइयों की चट्टान बिखर जाती हैं।)

– आचार्य रामनिवास 'गुणग्राहक'
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

एक निवेदन

इन योजनाओं की रूपरेखा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा बहुत पहले से बना रही थी। इन्हें अब मूर्तरूप दिया जा रहा है। श्री रामनिवास जी गुणग्राहक इन योजनाओं को लेखबद्ध रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इस कार्य में आचार्य श्री हरिप्रसाद जी भी सहयोग कर रहे हैं। सम्माननीय पाठकों से निवेदन है कि सभा द्वारा तैयार की जा रही इन योजनाओं में यदि वे किसी प्रकार भी सहयोगी बनना चाहें अथवा सुझाव देना चाहें तो वे आचार्य श्री रामनिवास जी अथवा आचार्य श्रीहरि प्रसाद जी से सभा कार्यालय के पते पर सम्पर्क करें। आपके सुझावों, विचारों का हम हृदय से स्वागत करेंगे।

– विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

फूलों का सदुपयोग करने में मदद करें

धार्मिक पूजा–पाठ अनुष्ठानों में फूलों का प्रयोग होता है। परन्तु कुछ समय के बात उन मुरझाते फूलों को वहां से हटा दिया जाता है। वे नालों–नहरों से होते हुए अन्ततः नदी में मिल जाते हैं। इससे जल प्रदूषित होता है। इस समस्या को हम सब मिलकर सुलझा सकते हैं। मुझे इस सपने को साकार करने व अपना कर्तव्य निभाने का प्रोत्साहन "लेलयार्क एजुकेशन" (प्रशिक्षण व डेवलपमेंट कम्पनी) ने एक प्रोग्राम के माध्यम से दिया है। मैंने प्रोजेक्ट महक को चुना है। हम फूलों को सुखाकर उनका सदुपयोग होली के रंग, हवन–सामग्री इत्यादि में कर सकते हैं। इसके अलावा फूल–पत्तियां व पेड़ों से मिलने वाली अन्य वस्तुओं को केचुओं की मदद से खाद बना सकते हैं। इससे फूलों का सदुपयोग होगा एवं पर्यावरण भी प्रदूषित नहीं होगा। पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए हमें मिल–जुलकर प्रयास करना होगा। तभी हम आनेवाली पीढ़ियों को प्रदूषण मुक्त वातावरण दे सकेंगे।

अतः आप सबसे निवेदन है कि इस प्रयास को देश भर में बढ़ाने में हमारी सहायता करें। आपके विचार हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं इसलिए आप सुझाव देने के लिए poonam17m@yahoo.com पर ई मेल करें। आइए, हाथ मिलाएं व बदलाव की नींव रखें।

– पूनम मल्होत्रा, 9968301015

17 जनवरी को सर्वधर्म बुद्धिजीवी विचार गोष्ठी

आगामी राष्ट्रमण्डल (कॉमन वेल्थ) खेलों के अवसर पर विदेशी खिलाड़ियों और अतिथियों को भोजन के अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों का सहारा लेकर 'गोमांस परोसने का प्रस्ताव' शर्मनाक, घोर शर्मनाक! आर्य (हिन्दू), सिख, ईसाई, बौद्ध, यहाँ तक कि अधिकांश मुस्लिम भाई भी इसे बर्दास्त नहीं करेंगे।

यह प्रस्ताव धर्मप्राण भारत की अस्मिता, संस्कृति और सामाजिक सद्भावना परस्पर के भाईचारे की भावना तथा धर्मनिरपेक्षता पर भंयकर कुठाराघात होगा। इस आसन्न संकट पर विचार करने के लिए रविवार 17 जनवरी 2010 को दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक आर्यसमाज करोल बाग, आर्यसमाज रोड नई दिल्ली –5 में "सर्वधर्म बुद्धिजीवी विचार गोष्ठी" स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में तथा महामण्डलेश्वर स्वामी भक्तहरिजी महाराज के सान्निध्य में होगी। सभी धार्मिक, सामाजिक सांस्कृतिक, राष्ट्रीयसंगठनों के नेता कार्यकर्त्ता एवं समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारियों सहित समस्त धर्मनिष्ठ गौसेवक जनता इस महत्त्वपूर्ण विचार गोष्ठी में सादर आमंत्रित है।

–: निवेदक :–

स्वामी सत्यबन्धु (संयोजक, 093132193747)

कीर्ति शर्मा (प्रधान, आर्यसमाज करोलबाग)

वैवाहिक - सेवा

आर्य वधू चाहिए

आर्यसमाजी परिवार के होनहार युवक, जे.बी.टी. अध्यापक के रूप में दिल्ली राज्य के उच्च. मा. विद्यालय में कार्यरत हैं, के लिए समकक्ष योग्य जीवनसंगिनी चाहिए। कोई दहेज, दान, तड़क–भड़क नहीं। केवल एक रुपये से सभी रस्में। बचाने वाले गोत्र हैं, खत्री दहिया तथा छिक्कार। जाति, भाषा, प्रान्त तथा देश, कोई बन्धन नहीं। सम्पर्क करें :–

मा. पूर्ण सिंह आर्य, नरेला दिल्ली–40, दूरभाष: 27786226 मो–9212836896

आर्य वर चाहिए

आर्य परिवार की कन्या, 23 वर्ष, कद 5 फुट 4 इंच, रंग गोरा इकहरा बदन, बी.कॉम, बी.एड, एम.बीए शिक्षा प्राप्त वर्तमान में पतजंलि विश्वविद्यालय से योग एवं स्वास्थ्य में डिप्लोमा कर रही है, के लिए आर्य परिवार के सुशिक्षित, कार्यरत, संस्कारवान, निरव्यसनी, शुद्ध शाकाहारी, योग्य वर की आवश्यकता है। जाति बन्धन कोई नहीं। सम्पर्क करें–

जय भगवान गोयल, बी–3–147, यमुना विहार, दिल्ली–110053
मो. 09818256468, 011–22910147

आर्य वर चाहिए

आर्य परिवार की कन्या, 26 वर्ष, कद 5 फुट 3 इंच, रंग गोरा, स्वस्थ सुन्दर, सुशील, एम.कॉम., फैशन डिजाइनिंग कोर्स, एच.डी.एफ.सी. बैंक में कार्यरत् के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है जो सरकारी, गैर–सकारी अथवा निजी कारोबारी हो। दिल्ली स्थित आर्य परिवार को वरीयता। जाति बन्धन कोई नहीं। सम्पर्क करें –

गणेश प्रसाद विद्यालंकार, मो. 09811945295, 011–25219077

महर्षि दयानन्द सरस्वती
जीवन चरित, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें
www.swamidayanand.com

सार्वदेशिक सभा के तत्वाधान में
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
आज ही लॉगऑन करें
www.aryamahasammelan.com

आर्यसमाज नोएडा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज, बी 69, सेक्टर–33, नोएडा का वार्षिकोत्सव दिनांक 20 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। यज्ञ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। 20 दिसम्बर को आयोजित गुरुकुल एवं आर्य महासम्मेलन के मुख्य अतिथि गाजियाबाद के सांसद राजनाथ सिंह ने अपने शिक्षा मंत्रित्व काल का उल्लेख करते हुए कहा कि उस समय इतिहास में बच्चों को पढ़ाया जा रहा था कि आर्य बाहर से आये थे। इसके लिए उन्होंने देश के इतिहासविदों की गोष्ठी की और उसके बाद उक्त भ्रान्तिपूर्ण धारणा को हटाकर नयी पुस्तकें प्रकाशित करायी गयीं। तब से यह पढ़ाया जा रहा है कि आर्य इस देश में पहले से ही थे।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रोफेसर वेदप्रकाश शास्त्री ने कहा कि गुरुकुल है तो संस्कृति है, गुरुकुल में आचार्य होता है, गुरुकुल का प्राण यज्ञ है, देश में जो कुछ बचा है वह संस्कृति के कारण बचा है। डॉ. महेश विद्यालंकार ने कहा कि जो ओज गुरुकुल के ब्रह्मचारी में होता है वह ओज अन्य बच्चों में नहीं होता।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि प्रेरक चरित्र ही प्रेरणा का पोषक होता है।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए ईशान प्रबंधन शिक्षण संस्था के चेयरमैन डॉ. डी. के. गर्ग ने कहा कि उनके संस्थान में होने वाले यज्ञ में छोटे से लेकर बड़े तक सभी आहुतियां देते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जयेन्द्र कुमार ने कहा विचारों से ही जीवन बनता है, बदलता है इसलिए लोगों को चाहिए कि वे उद्भट विद्वानों को सुनें।

– आचार्य

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई द्वारा

धर्माचार्यों का अभिनन्दन

रविवार दिनांक 27/12/2009 को आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने पं. प्रकाशचन्द्र शास्त्री धर्माचार्य आर्यसमाज अन्धेरी तथा पं. ईश्वरमित्र शास्त्री धर्माचार्य आर्यसमाज चेम्बूर को यज्ञ, संस्कार व वैदिक धर्म के प्रचार – प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया। पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय द्वारा स्मृति चिह्न श्री ज्ञानचन्द्र टिकिया के हाथों श्रीफल और स्वामी मेघानन्द सरस्वती के करकमलों से दोनों विद्वानों को 21 हजार रुपये का चेक सभा की ओर से प्रदान किया गया। इस अवसर पर उक्त दोनों विद्वान पुरोहित का सम्मान वहाँ पर उपस्थित अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों तथा आर्यसमाज के पदाधिकारियों एवं कर्मठ सदस्यों ने भी पुष्प माला पहनाकर किया।

– विनोद कुमार शास्त्री

ओ३म्

आर्य पर्वों की सूची – विक्रमी सम्वत् 2066–67 तदनुसार सन् 2010

क्र. सं.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिवस
1.	लोहड़ी	माघ कृष्ण 13, वि. 2066	13/1/2010	बुधवार
2.	मकर–संक्रान्ति	माघ कृष्ण 14, वि. 2066	14/1/2010	गुरुवार
3.	वसन्त–पंचमी	माघ शुक्ल 5, वि. 2066	20/1/2010	बुधवार
4.	सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण 8, वि. 2066	6/2/2010	शनिवार
5.	ऋषि-पर्व (महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण 10, वि. 2066	8/2/2010	सोमवार
6.	ज्योति-पर्व शिवरात्रि (बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण 13, वि. 2066	12/2/2010	शुक्रवार
7.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन शुक्ल 3, वि. 2066	17/2/2010	बुधवार
8.	मिलन-पर्व नवसस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2066	28/2/2010	रविवार
9.	आर्यसमाज–स्थापना दिवस/ चैत्रा शुक्ल प्रतिपदा/ नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/ गुड़ी पड़वा/चेती चांद	चैत्रा शुक्ल 1, वि. 2067	16/3/2010	मंगलवार
10.	रामनवमी	चैत्रा शुक्ल 9, वि. 2067	24/3/2010	बुधवार
11	वैशाखी	वैशाख कृष्ण 14, वि. 2067	13/4/2010	मंगलवार
12.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल 3, वि. 2067	12/8/2010	गुरुवार
13.	वेद-प्रचार समारोह: श्रावणी उपाकर्म (रक्षा–बन्धन)	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2067	24/8/2010	मंगलवार
14.	वेद-प्रचार समारोह: श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण 8, वि. 2067	2/9/2010	गुरुवार
15.	विजयादशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल 10, वि. 2067	17/10/2010	रविवार
16.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल 12, वि. 2067	19/10/2010	मंगलवार
17.	क्षमा-पर्व दीपावली (ऋषि–निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2067	5/11/2010	शुक्रवार
18.	बलिदान-पर्व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष शुक्ल 2, वि. 2067	23/12/2010	गुरुवार

नोट : देशी तिथियों में घट–बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

– विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली– 110001

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, राजकोट में

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव

सामवेद पारायण यज्ञ : दिनांक 06 फरवरी से 12 फरवरी 2010 तक

ब्रह्मा : आचार्य विद्यादेव जी/रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक/ श्री जगत वर्मा/ श्री दिनेश आर्य पथिक

बोधोत्सव : दिनांक 12–02–2010 शुक्रवार

यज्ञ की पूर्णाहुतिः प्रातः 9.45 बजे तक

ध्वजारोहण : श्रीमती अमित चौहान (चेयरपरसन एमिटी इन्टरनेशनल स्कूल्स)

श्रद्धांजलि सभा : अपराह्न 3 बजे से सायं 5 बजे तक

मुख्य अतिथि : डॉ. अशोक के. चौहान (संस्थापक अध्यक्ष एमिटी शिक्षण संस्थान)

विशिष्ट अतिथि : पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा (प्रधान, डी.ए.वी.)

कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान् :– महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती (नोएडा), स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती (पूठ), स्वामी देवव्रत सरस्वती (प्रधान, आर्यवीर दल), स्वामी आर्येषानन्द सरस्वती (माउंट आबू), डॉ. विनय विद्यालंकार (नैनीताल), आचार्य रामकिशोर शर्मा (सोरों), डॉ. रमा (हंसराज कॉलेज, दिल्ली), श्री गोपाल चन्द (यू.के), श्री गिरीश खोसला वेदपथिक (अमेरिका), श्री विनय आर्य (दिल्ली) सांसद कुंवरजी भाई बावड़िया (राजकोट), पूर्व सांसद डॉ0 बल्लभभाई कथीरिया (राजकोट) आदि।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करें।

–: निवेदक :–

सत्यानन्द मुंजाल	**श्रीमती शिवराजवती आर्य**	**रामनाथ सहगल**
प्रधान	उपप्रधान	मन्त्री

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा द्वारा

रक्तदान शिविर एवं कैदियों को कम्बल वितरण

दिनांक 23दिसम्बर, 2009 को स्वामी द्वारा श्रद्धानन्द दिवस पर रक्तदान शिविर लगाया गया इसके मुख्य अतिथि विधायक ओम बिरला ने कहा कि सभी दानों में सर्वश्रेष्ठ है रक्तदान। आपके द्वारा दान किया हुआ रक्त किसी कि जिन्दगी के लिए वरदान साबित हो सकता है। उन्होंने आर्यसमाज के कार्यों की प्रशंसा की। रक्तदान शिविर की सहप्रभारी कुमारी पूजा राजवंशी (पार्षद) ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

इसी शृंखला में दिनांक 10 जनवरी, 2010 को आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा 100 कम्बल केन्द्रीय कारागार कोटा में बन्दियों को कम्बल वितरित किए गए।

इस अवसर पर जेल अधीक्षक ने कहा कि आर्यसमाज एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्था है जिसका देश के स्वतंत्रता संग्राम में बहुत बड़ा योगदान रहा है। **– अर्जुनदेव चढ्डा, जिला प्रधान**

आर्ष गुरुकुल, खेड़ा खुर्द, दिल्ली में

व्याकरण प्रतियोगिता सम्पन्न

26–27 दिसम्बर को गुरुकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली–82 में अन्तर गुरुकुलीय व्याकरण प्रतियोगिता हुई। इसमें व्याकरण वरिष्ठ वर्ग में गुरुकुल खेड़ा खुर्द के ब्र0 संजय कुमार (असम) ने प्रथम तथा गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अष्टाध्यायी प्रतियोगिता में गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी जसवीर एवं गुरुकुल गौतम नगर के राजेश संयुक्त रूप से प्रथम रहे। गुरुकुल झज्जर के ब्र० रौनक ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

–आचार्य सुधांशु

शोक समाचार

श्री भंवर सिंह जी का निधन

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष एवं आर्य पब्लिक स्कूल प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री भंवर सिंह जी का दिनांक 5 जनवरी को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उनके पैतृक गांव साधोपुर, गाजियाबाद में किया गया। श्रद्धांजलि सभा उनके गांव में ही दिनांक 13 जनवरी, 2010 को प्रातः 10 बजे सम्पन्न हुई। जिसमें उनके परिजनों के साथ–साथ आर्यसमाज के अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री विजय गुप्ता जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री विजय गुप्ता जी की धर्मपत्नी श्रीमती ज्ञानवती गुप्ता का 9 जनवरी, 2010 को अकस्मात् निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन पूर्ण वैदिक रीति से स्थानीय श्मशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शोक सभा दिनांक 20 जनवरी, 2010 को आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली में आयोजित की गई है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

आर्य उपप्रतिनिध सभा, प्रयाग द्वारा

वैदिक धर्म प्रचार शिविर प्रयाग माघ मेला 2009–10

31 दिसम्बर से 30 जनवरी, 2010

शिविर दिनचर्या

यज्ञ–भजन–प्रवचन प्रतिदिन

ब्रह्मयज्ञ : प्रातः 7.30 से 8 बजे

देवयज्ञ, भजन, प्रवचन प्रातः 8 –11बजे

वेदकथा, योगचर्चा, महिला सत्संग

दोपहर : 2 से 5 बजे तक

ब्रह्मयज्ञ सायं : 5.30 से 6 बजे

भजन एवं आध्यात्मिक चर्चा 6–9 बजे

आमंत्रित विद्वत मण्डल

आचार्य राजदेव शास्त्री(ओरैया), आचार्य अशर्फीलाल शास्त्री (गुरुकुल सिराथू, कौशाम्बी), पं0 हरिश्चन्द (कांगडा), श्री दिनेश कुमार आर्य (प्रयाग), श्री श्याम किशोर आर्य (प्रयाग), डा0 राजाराम आनन्द, योगाचार्य (इलाहाबाद), श्री किशोरी लाल आर्य (फतेहपुर)।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा को फैलान में सहयोगी बनें।

– आर्य राजेन्द्र कपूर, प्रचार मन्त्री

वैदिक संध्या–वैज्ञानिक विवेचन

पुस्तक का लोकार्पण

25 दिसम्बर को रामलीला मैदान नई दिल्ली में आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द महराज के 83वें बलिदान दिवस पर वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया द्वारा लिखित एवं माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट, सरस्वती विहार दिल्ली द्वारा प्रकाशित **"वैदिक संध्या–वैज्ञानिक विवेचन"** पुस्तक का लोकार्पण आचार्य बलदेवजी, स्वामी धर्मानन्द जी दुग्धाहारी, श्री श्यामलाल गर्ग विधायक, श्री सुभाष आर्य नेता नगर निगम आदि द्वारा किया गया।

दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने कहा कि पुस्तक का मूल्य 25 रुपये है तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, कार्यालय 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 में उपलब्ध है।

– भजन प्रकाश आर्य, प्रधान

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर, कोटा में

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिनांक 23, 24 दिसम्बर को आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर, तलवंडी कोटा में वार्षिकोत्सव व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह मनाया गया। आर्यसमाज के प्रधान श्री शिवदयाल गुप्ता, मंत्री श्री श्रीचन्द गुप्ता ने कार्यक्रम में बाहर से पधारे आर्य विद्वानों का माल्यार्पण करके स्वागत किया। भजनोपदेशक पं. भूपेन्द्र सिंह अलीगढ़ ने ईश्वर भक्ति के भजनों से उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। **– श्रीचन्द गुप्ता, मंत्री**

उत्तराखण्ड राज्य में

संस्कृत द्वितीय राजभाषा घोषित

टनकपुर (चम्पावत) 30 दिसम्बर 2009 को दयानन्द इण्टर कॉलेज में सम्पन्न गोष्ठी में मुख्य अतिथि डॉ. स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने कहा – ***"उत्तराखण्ड में संस्कृत को राज्य की द्वितीय राजभाषा घोषितकर मुख्य मन्त्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने प्रदेशवासियों का गौरव बढ़ाया है। चारों वेदों का ज्ञान परमात्मां ने देवभूमि–आर्यावर्त (भारत) में चार ऋषियों की आत्मा में प्रकाशित किया था।"*** धन्यवाद प्रस्तावपत्र आचार्य रामदेव आर्य द्वारा मुख्यमंत्री जी को भेजा गया। ***– प्रधानाचार्य***

बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हांसी का 20वां वार्षिकोत्सव 22–23 दिसम्बर 2009 को धूमधाम से मनाया गया। 22 दिसम्बर को प्रातः हवन–यज्ञ के उपरान्त वैदिक प्रवक्ता आचार्य रामसुफल शास्त्री हांसी के नेतृत्व में वैदिक चेतना रैली निकाली गई। महिला आर्यसमाज की उपप्रधान श्रीमती उर्मिला आर्या की अध्यक्षता में सायंकाल महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया।

23 दिसम्बर को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का 83वां बलिदान दिवस समारोह श्री सागरनाथ के सान्निध्य में मनाया गया। इसके मुख्य अतिथि युवा संन्यासी स्वामी राजदास महाराज हिसार थे। चौ. फतेह सिंह गुर्जर, पं. नरेन्द्र देव शास्त्री चण्डीगढ़, पं. हरिकिशोर शास्त्री आदि ने अपने–अपने विचार रखे। स्कूली बच्चों ने मनभावन सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

– मन्त्री, आर्यवीर दल हांसी

गुरुकुल आमसेना आश्रम उडीसा मे

धर्म परावर्तन समारोह

गुरुकुल आश्रम आम सेना (जि0 नवापारा) के प्रयत्नों से धर्म परावर्तन समारोह का आयोजन, गुरुकुल से 350 किलोमीटर दूर, जिला सुंदरगढ़ के गाँव पद्मपुर में किया गया। इसमें 80 परिवारों ने वैदिक धर्म अपनाया। समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज, साकेत (नई दिल्ली) के प्रधान प्रो0 पूर्ण सिंह डबास ने की। समारोह में कई सौ लोग उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ0 पूर्ण सिंह डबास द्वारा आर्यसमाज साकेत की ओर से पैंसठ हजार रुपये (65,000/–) का चैक भी गुरुकुल आश्रम आमसेना को भेंट किया गया।

– प्रमिला नैयर, सचिव

आर्यसमाज बाँगरमऊ, उन्नाव का 37 वां वार्षिकोत्सव

27 जनवरी से 29 जनवरी 2010

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

भजनोपदेशक : श्री दिनेशदत्त आर्य एवंश्री रामसेवक आर्य

आर्यजन पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं। ***– टीकाराम आर्य (प्रधान)***

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

11 जनवरी, 2010 से 17 जनवरी, 2010

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १४/१५-०१-२०१०
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में उपलब्धन

तांबे व लोहे के हवन कुण्ड व यज्ञपात्र

समस्त यज्ञ प्रेमियों तथा आर्य समाजों के लिए हर्ष का विषय है कि सभा कार्यालय में अब तांबे व लोहे के हवनकुण्ड तथा यज्ञपात्र बहुत ही अच्छी क्वालिटी, उचित दामों तथा विभिन्न साइजों में उपलब्ध हैं। सभी आर्यजन इसका लाभ उठाएं। कुण्ड के साइज व मूल्य इस प्रकार हैं :-

ताबा :-

8×8 = 3000/- रुपये
10×10 = 6000/- रुपये
12×12 = 10000/- रुपये
14×14 = 15000/- रुपये

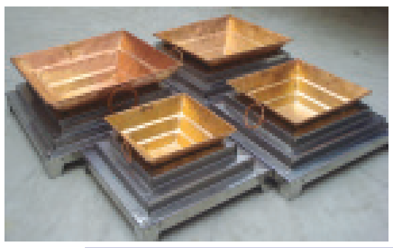

मिक्स -

कुण्ड तांबा-स्टैंड स्टील

8×8 = 1100/- रुपये
10×10 = 1500/- रुपये
12×12 = 2000/- रुपये
14×14 = 3000/- रुपये

प्रतिष्ठा में,
श्री..........................

सामाजिक, धार्मिक व समसामयिक गतिविधियों का दर्पण

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

आप तक पहुंचाता है, देश-विदेश सहित दिल्ली एवं आसपास की आर्य संस्थाओं की समस्त जानकारियां।

आज ही सदस्यता प्राप्त करें

वार्षिक सदस्यता : 150/- आजीवन सदस्यता 750/-

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित
छह सुन्दर डिजाइनों में
केवल मात्र 200/- रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

–: प्राप्ति स्थान :–
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष: 23360150, 23365959

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : सुशील महाजन   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर